Lord Rudra Mantra Sadhana Evam Siddhi

भगवान् रुद्र मंत्र एवं साधना एवं सिद्धि

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

धर्म, भक्त एवं सृष्टि की रक्षा हेतु भगवान् शिव ने अनेंको विचित्र अवतार लिये हैं, जिन्हें 'भैरव' या 'रुद्रावतार' कहा जाता है। 'शिव' 'भैरव' और 'रुद्र' परमात्मा के ही पर्यायवाची शब्द हैं। अनेक तंत्रशास्त्रों में भैरवों का उल्लेख मिलता है। किसी में 8, किसी में 10 और रुद्रयामलतंत्र में 64 भैरवों का उल्लेख मिलता है। विशेष उपासना की दृष्टि से वीरभद्र, हनुमान, शरभराज, स्वर्णाकर्षणभैरव, कालभैरव, नीलकण्ठ आदि रुद्रावतारों का उत्कृष्ट स्थान है। रुद्रों का अवतार भीषण संकटों का नाश करने हेतु ही हुआ था इसलिये इनकी उपासना से महासंकट से शीघ्र छुटकारा मिलता है।

इस रुद्र मंत्र को मनुष्य किसी भी रुद्र अर्थात् भगवान् शिव के किसी भी स्वरूप के समक्ष सिद्ध कर सकता है। रुद्रदेव मंत्रसिद्धि हेतु एक लाख एवं पुरश्चरण में दस लाख जप विधिपूर्वक करें। जप उपरान्त् होमादि कार्य को श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करें। भगवान् रुद्र का यह मंत्र अत्यन्त प्रभावशाली है एवं साधकजनों के लिये कल्पवृक्ष के समान है। गुरु आज्ञा उपरान्त् मंत्र का प्राचीन शिवलिंग के समक्ष रात्रिकाल में जप करने से समस्त आपदाओं का निवारण होता है एवं मनोवांछित सिद्धि प्राप्त होती है। पुरश्चरण करने से भगवान् रुद्र का

साक्षात्कार होता है। भैरवमन्दिर अथवा श्मशान में दीपदान एवं बलिप्रदान करते हुए जप करने से घोर संकट, प्रेतबाधा एवं बलवान शत्रुओं का संहार होता है। स्फटिक शिवलिंग के सम्मुख जप करने से महालक्ष्मी का आगमन एवं शान्ति-पुष्टि का लाभ होता है। इसी प्रकार विधिवत् षटकर्मों को इस मंत्र के माध्यम से सिद्ध किया जा सकता है। कामनानुसार अभिमंत्रित रुद्राक्ष धारण करने एवं शिवलिंग को स्नान कराने से त्वरित लाभ होता है। अन्य गुप्त विधान गुरुमुख से प्राप्त करें।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीरुद्रमंत्रस्य बौधायनऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीमहारुद्रो देवता, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीबौधायनऋर्षये नमः शिरसि। पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे। भगवान् महारुद्रदेवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

षडंगन्यास- ॐ नमो भगवते रुद्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः)।

ॐ नमो भगवते रुद्राय तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा)।

ॐ नमो भगवते रुद्राय मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्)।

ॐ नमो भगवते रुद्राय अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुम्)।

ॐ नमो भगवते रुद्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयाय वौषट्)।

ॐ नमो भगवते रुद्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)।

विशेष- प्रत्येक नाममंत्रों से भगवान् शिव पर गन्धाक्षतपुष्प तथा बेलपत्र चढ़ाये-

एकादश-रुद्रपूजा- ॐ अघोराय नमः।1। ॐ पशुपतये नमः।2। ॐ शर्वाय नमः।3। ॐ विरूपाक्षाय नमः।4। ॐ विश्वरूपिणे नमः।5। ॐ त्र्यम्बकाय नमः।6। ॐ कपर्दिने नमः।7। ॐ भैरवाय नमः।8। ॐ शूलपाणये नमः।9। ॐ ईशानाय नमः।10। ॐ महेश्वराय नमः।11।

एकादश-शक्तिपूजा- ॐ उमायै नमः।1। ॐ शंकरप्रियायै नमः।2। ॐ पार्वत्यै नमः।3। ॐ गौर्यै नमः।4। ॐ काल्यै नमः।5। ॐ कालिन्द्यै नमः।6। ॐ कोटर्यै नमः।7। ॐ विश्वधारिण्यै नमः।8। ॐ ह्रां नमः।9। ॐ ह्रीं नमः।10। ॐ गंगादेव्यै नमः।11।

अंगपूजा- ॐ ईशानाय नमः, पादौ पूजयामि। ॐ शंकराय नमः, जंघे पूजयामि। ॐ शिवाय नमः, जानुनी पूजयामि। ॐ शूलपाणये नमः, गुल्फौ पूजयामि। ॐ शम्भवे नमः, कटी

पूजयामि। ॐ स्वयम्भुवे नमः, गुह्यं पूजयामि। ॐ महादेवाय नमः, नाभिं पूजयामि। ॐ विश्वकर्त्रे नमः, उदरं पूजयामि। ॐ सर्वतोमुखाय नमः, पार्श्वे पूजयामि। ॐ स्थाणवे नमः, स्तनौ पूजयामि। ॐ नीलकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि। ॐ शिवात्मने नमः, मुखं पूजयामि। ॐ त्रिनेत्राय नमः, नेत्रे पूजयामि। ॐ नागभूषणाय नमः, शिरः पूजयामि। ॐ देवाधिदेवाय नमः, सर्वांगं पूजयामि।

गणपूजा– ॐ गणपतये नमः। ॐ कार्तिकाय नमः। ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईश्वराय नमः। ॐ दण्डपाणये नमः। ॐ नन्दिने नमः। ॐ महाकालाय नमः।

अष्टमूर्तिपूजा– ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः। ॐ भवाय जलमूर्तये नमः। ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः। ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः। ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः। ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः। ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः। ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।

अंगपूजा करने के पश्चात् भगवान् शिवको बेलपत्र, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप नैवेद्यादि उत्तम सामग्रियां अर्पित करते हुए इस प्रकार उनका ध्यान करें-

ध्यानम्- कैलासाचलसन्निभं त्रिनयनं पंचास्यमम्बायुतं नीलग्रीवमहीशभूषणधरं व्याघ्रत्वचा प्रावृतम्। अक्षस्रग्वर कुण्डिकाभयकरं चान्द्रीं कलां बिभ्रतं गंगाम्भो विलसज्जटं दशभुजं वन्दे महेशं परम्।।

रुद्रमंत्र- "ॐ नमो भगवते महारुद्राय।"

रुद्रगायत्री- "ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्र प्रचोदयात्।"

रुद्राष्टकम्- नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं। निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं।1।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं। करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहं।2।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरं मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरं। स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा।3।

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं। मृगाधीशचर्माम्बरं मुंडमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।4।

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं। त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं।5।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी। चिदानन्द संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।6।

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं भजंतीह लोके परे वा नराणां। न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं।7।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं। जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।8।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये। ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

रुद्रसहस्रनाम स्तोत्र- यह पावन स्तोत्र ब्रह्मा के पुत्र तण्डी के द्वारा कहा गया है। जिसका जप करने से तण्डी ने गणाधिपत्य प्राप्त किया था। जो नित्य विधिपूर्वक इस पावन स्तोत्र का अध्ययन या श्रवण करता है वह हजार अश्वमेधयज्ञ का फल प्राप्त करता है। नियमित जप करने से समस्त पापों का क्षय होता है एवं मनुष्य भगवान् रुद्र की अचल भक्ति प्राप्त करता है। शिवमन्दिर, भैरव मन्दिर या एकान्त स्थल में त्रिकाल संध्या इस स्तोत्र का पाठ करने से शत्रुपीड़ा, ग्रहपीड़ा एवं अभिचारिक पीड़ा से तत्काल मुक्ति मिलती है।

स्तोत्रम्- ॐ स्थिर, स्थाणु, प्रभु, भानु, प्रवर, वरद, वर, सर्वात्मा, सर्वविख्यात, सर्व, सर्वकर, भव, जटी, दण्डी, शिखण्डी, सर्वग, सर्वभावन, हरि, हरिणाक्ष, सर्वभूतहर, स्मृत, प्रवृत्ति, निवृत्ति, शान्तात्मा, शाश्वत, ध्रुव, श्मशानवासी, भगवान्, खचर, गोचर, अर्दन, अभिवाद्य, महाकर्मा, तपस्वी, भूतधारण, उन्मत्तवेष, प्रच्छन्न, सर्वलोक, प्रजापति, महारूप, महाकाय, सर्वरूप, महायश, महात्मा, सर्वभूत, विरूप, वामन, नर, लोकपाल, अन्तर्हितात्मा, प्रसाद, अभयद, विभु, पवित्र, महान्, नियत, नियताश्रय, स्वयम्भू, सर्वकर्मा, आदि, आदिकर, निधि, सहस्राक्ष, विशालाक्ष, सोम, नक्षत्रसाधक, चन्द्र, सूर्य, शनि, केतु, ग्रह,

मंगल, ग्रहपति, बृहस्पति, मत, बुध, राजा, शुक्र, राज्योदय, राहु, कर्ता, मृगबाणार्पण, घन, महातप, दीर्घतप, अदृश्य, धनसाधक, संवत्सर, कृत, मंत्र, प्राणायाम, परन्तप, योगी, योग, महाबीज, महारेता, महाबल, सुवर्णरेता, सर्वज्ञ, सुबीज, वृषवाहन, दशबाहु, अनिमिष, नीलकण्ठ, उमापति, विश्वरूप, स्वयंश्रेष्ठ, बलवीर, बलाग्रणी, गणकर्ता, गणपति, दिग्वास, काम्य, मंत्रवित्, परम, मंत्र, सर्वभावकर, हर, कमण्डलुधर, धन्वी, बाणहस्त, कपालवान, शरी, शतघ्नी, खड्गी, पट्टिशी, आयुधी, महान्, अज, मृगरूप, तेज, तेजस्कर, विधि, उष्णीषी, सुवक्त्र, उदग्र, विनत, दीर्घ, हरिकेश, सुतीर्थ, कृष्ण, श्रृगालरूप, सर्वार्थ, मुण्ड, सर्वशुभंकर, सिंहशार्दूलरूप, गन्धकारी, कपर्दी, ऊर्ध्वरिता, ऊर्ध्वलिंगी, ऊर्ध्वशायी, नभ, तल, त्रिजटी, चीरवासा, रुद्र, सेनापति, विभु, अहोरात्र, नक्त, तिग्ममन्यु, सुवर्चस, गजहा, दैत्यहा, काल, लोकधाता, गुणाकर, सिंहशार्दूलरूपाणामार्द्रचर्मांबरंधर, कालयोगी, महानाद, सर्वावास, चतुष्पथ, निशाचर, प्रेतचारी, सर्वदर्शी, महेश्वर, बहु, भूत, बहुधन, सर्वसार, अमृतेश्वर, नृत्यप्रिय, नित्यनृत्य, नर्तन, सर्वसाधक, सकार्मुक, महाबाहु, महाघोर, महातप, महाशर, महापाश, नित्य, गिरिचर, अमत, सहस्रहस्त, विजय, व्यवसाय, अनिन्दित, अमर्षण, मर्षणात्मा, यज्ञहा, कामनाशन, दक्षहा,

परिचारी, प्रहस, मध्यम, तेज, अपहारी, बलवान्, विदित, अभ्युदित, अबहु, गम्भीरघोष, योगात्मा, यज्ञहा, कामना, अशन, गम्भीररोष, गम्भीर, गम्भीरबलवाहन, न्यग्रोधरूप, न्यग्रोध, विश्वकर्मा, विश्वभुक्, तीक्ष्णोपाय, हर्यश्व, सहाय, कर्म, कालवित्, विष्णु, प्रसादित, यज्ञ, समुद्र, वड़वामुख, हुताशनसहाय, प्रशान्तात्मा, हुताशन, उग्रतेज, महातेज, जय, विजयकालवित्, ज्योतिषामयन, सिद्धि, सन्धि, विग्रह, खड्गी, शंखी, जटी, ज्वाली, खचर, द्युचर, बली, वैणवी, पणवी, काल, कालकण्ठ, कटंकट, नक्षत्रविग्रह, भाव, निभाव, सर्वतोमुख, विमोचन, शरण, हिरण्यकवचोद्भव, मेखला, कृतिरूप, जलाचार, स्तुत, वीणी, पणवी, ताली, नाली, कलिकटु, सर्वतूर्यनिनादी, सर्वव्याप्यपरिग्रह, व्यालरूपी, बिलावासी, गुहावासी, तरंगवित्, वृक्ष, श्रीमालकर्मा, सर्वबन्धविमोचन, बन्धन, सुरेन्द्राणां, युधिशत्रुविनाशन, सखा, प्रवास, दुर्वाप, सर्वसाधुनिषेवित, प्रस्कन्द, अविभाव, तुल्य, यज्ञविभागवित्, सर्ववास, सर्वचारी, दुर्वासा, वासव, मत, हैम, हेमकर, यज्ञ, सर्वधारी, धरोत्तम, आकाश, निर्विरूप, विवास, उरग, खग, भिक्षु, भिक्षुरूपी, रौद्ररूप, सुरूपवान्, वसुरेता, सुवर्चस्वी, वसुवेग, महाबल, मन, वेग, निशाचार, सर्वलोकशुभप्रद, सर्वावासी, त्रयीवासी, उपदेशकर, धर, मुनि-आत्मा, मुनि-लोक,

सभाग्य, सहस्रभुक्, पक्षी, पक्षरूप, अतिदीप्त, निशाकर, समीर, दमनाकार, अर्थ, अर्थकर, वश, वासुदेव, देव, वामदेव, वामन, सिद्धियोगापहारी, सिद्ध, सर्वार्थसाधक, अक्षुण्ण, क्षुण्णुरूप, वृषण, मृदु, अव्यय, महासेन, विशाख, षष्टिभाग, गवांपति, चक्रहस्त, विष्टम्भी, मूलस्तम्भन, ऋतु, ऋतुकर, ताल, मधु, मधुकर, वर, वानस्पत्य, वाजसन, नित्य, आश्रमपूजित, ब्रह्मचारी, लोकचारी, सर्वचारी, सुचारवित्, ईशान, ईश्वर, काल, निशाचारी, अनेकद्रृक्, निमित्तस्थ, निमित्त, नन्दि, नन्दिकर, हर, नन्दीश्वर, सुनन्दी, नन्दन, विषमर्दन, भगहारी, नियन्ता, काल, लोकपितामह, चतुर्मुख, महालिंग, चारुलिंग, लिंगाध्यक्ष, सुराध्यक्ष, कालाध्यक्ष, युगावह, बीजाध्यक्ष, बीजकर्ता, अध्यात्म, अनुगत, बल, इतिहास, कल्प, दमन, जगदीश्वर, दम्भ, दम्भकर, दाता, वंश, वंशकर, कलि, लोककर्ता, पशुपति, महाकर्ता, अधोक्षज, अक्षर, परम, ब्रह्म, बलवान्, शुक्र, नित्य, अनीश, शुद्धात्मा, शुद्ध, मान, गति, हवि, प्रासाद, बल, दर्प, दर्पण, हव्य, इन्द्रजित्, वेदकार, सूत्रकार, विद्वान, परमर्दन, महामेघनिवासी, महाघोर, वशी, कर, अग्निज्वाल, महाज्वाल, परिधूम्रावृत, रवि, धिषण, शंकर, अनित्य, वर्चस्वी, धूम्रलोचन, नील, अंगलुप्त, शोभन, नरविग्रह, स्वस्ति, स्वस्तिस्वभाव, भोगी, भोगकर, लघु, उत्संग, महांग, महागर्भ,

प्रतापवान, कृष्णवर्ण, सुवर्ण, इन्द्रिय, सर्ववर्णिक, महापाद, महाहस्त, महाकाय, महायश, महामूर्धा, महामात्र, महामित्र, नगालय, महास्कन्ध, महाकर्ण, महोष्ठ, महाहनु, महानास, महाकण्ठ, महाग्रीव, श्मशानवान्, महाबल, महातेज, अन्तरात्मा, मृगालय, लम्बितोष्ठ, निष्ठ, महामाय, पयोनिधि, महादन्त, महाद्रंष्ट्र, महाजिह्व, महामुख, महानख, महारोम, महाकेश, महाजट, असपत्न, प्रसाद, प्रत्यय, गीतसाधक, प्रस्वेदन, अस्वहेन, आदिक, महामुनि, वृषक, वृषकेतु, अनल, वायुवाहन, मण्डली, मेरुवास, देववाहन, अथर्वशीर्ष, सामास्य, ऋक्सहस्रोर्जितेक्षण, यजुःपादभुज, गुह्य, प्रकाशौज, अमोघार्थप्रसाद, अन्तर्भाव्य, सुदर्शन, उपहार, प्रिय, सर्व, कनक, कांचनस्थित, नाभि, नन्दिकर, हर्म्य, पुष्कर, स्थपति, स्थित, सर्वशास्त्र, धन, आद्य, यज्ञ, यज्वा, समाहित, नग, नील, कवि, काल, मकर, कालपूजित, सगण, गणकार, भूतभावनसारथि, भस्मशायी, भस्मगोप्ता, भस्मभूततनु, गण, आगम, विलोप, महात्मा, सर्वपूजित, शुक्ल, स्त्रीरूपसम्पन्न, शुचि, भूतनिषेवित, आश्रमस्थ, कपोतस्थ, विश्वकर्मा, पति, विराट्, विशालशाख, ताम्रोष्ठ, अम्बुजाल, सुनिश्चित, कपिल, कलश, स्थूल, आयुध, रोमश, गन्धर्व, अदिति, तार्क्ष्य, अविज्ञेय, सुशारद, परश्वधायुध, देव, अर्थकारी, सुबान्धव, तुम्बवीण, महाकोप,

ऊर्ध्वरिता, जलेशय, उग्र, वंशकर, वंश, वंशवादी, अनिन्दित, सर्वांगरूपी, मायावी, सुहृद, अनिल, बल, बन्धन, बन्धनकर्ता, सुबन्धनविमोचन, राक्षसघ्न, कामारि, महाद्रंष्ट्र, महायुध, लम्बित, लम्बितोष्ठ, लम्बहस्त, वरप्रद, बाहु, अनिन्दित, सर्व, शंकर, अकोपन, अमरेश, महाघोर, विश्वदेव, सुरारिहा, अहिर्बुध्नय, निर्ऋति, चेकितान, हली, अजैकपात्, कापाली, शं, कुमार, महागिरि, धन्वन्तरि, धूमकेतु, सूर्य, वैश्रणव, धाता, विष्णु, शक्र, मित्र, त्वष्टा, धर, ध्रुव, प्रभास, पर्वत, वायु, अर्यमा, सविता, रवि, धृति, विधाता, मान्धाता, भूतभावन, नीर, तीर्थ, भीम, सर्वकर्मा, गुणोद्वह, पद्मगर्भ, महागर्भ, चन्द्रवक्त्र, नभ, अनघ, बलवान्, उपशान्त, पुराण, पुण्यकृत, तम, क्रूरकर्ता, क्रूरवासी, तनु, आत्मा, महौषध, सर्वाशय, सर्वचारी, प्राणेश, प्राणिनांपति, देवदेव, सुखोत्सिक्त, सत्, असत्, सर्वरत्नवित्, कैलासस्थ, गुहावासी, हिमवद्, गिरिसंश्रय, कुलहारी, कुलाकर्ता, बहुवित्त, बहुप्रज, प्राणेश, बन्धकी, वृक्ष, नकुल, अद्रिक, ह्रस्वग्रीव, महाजानु, अलोल, महौषधि, सिद्धान्तकारी, सिद्धार्थ, छन्द, व्याकरणोद्भव, सिंहनाद, सिंहदंष्ट्र, सिंहास्य, सिंहवाहन, प्रभावात्मा, जगत्काल, काल, कम्पी, तरु, तनु, सारंग, भूतचक्रांक, केतुमाली, सुवेधक, भूतालय, भूतपति, अहोरात्र, मल,

अमल, वसुभृत्, सर्वभूतात्मा, निश्चल, सुविदु, बुध, सर्वभूतानामसुहृत्, निश्चल, चलविद्, बुध, अमोघ, संयम, हृष्ट, भोजन, प्राणधारण, धृतिमान्, मतिमान्, ीयक्ष, सुकृत, युधांपति, गोपाल, गोपति, ग्राम, गोचर्मवसन, हर, हिरण्यबाहु, गुहावास, प्रवेशन, महामना, महाकाम, चित्तकाम, जितेन्द्रिय, गान्धार, सुराप, तापकर्मरत, हित, महाभूत, भूतवृत, अप्सर, गणसेवित, महाकेतु, धराधाता, नैकतानरत, स्वर, अवेदनीय, आवेद्य, सर्वग, सुखावह, तारण, चरण, धाता, परिधा, परिपूजित, संयोगी, वर्धन, वृद्ध, गणिक, गणाधिप, नित्य, धाता, सहाय, देवासुरपति, पति, युक्त, युक्तबाहु, सुदेव, सुपर्वण, आषाढ, सुषाढ़, स्कन्धद, हरित, हर, वपु, आवर्तमान, अन्य, वपुश्रेष्ठ, महावपु, शिर, विमर्शन, सर्वलक्ष्य–लक्षण–भूषित, अक्षय, रथगीत, सर्वभोगी, महाबल, साम्नाय, महाम्नाय, तीर्थदेव, महायश, निर्जीव, जीवन, मंत्र, सुभग, बहुकर्कश, रत्नभूत, रत्नांग, महार्णवनिपातवित्, मूल, विशाल, अमृत, व्यक्ताव्यक्त, तपोनिधि, आरोहण, अधिरोह, शीलधारी, महातप, महाकण्ठ, महायोगी, युग, युगकर, हरि, युगरूप, महारूप, वहन, गहन, नग, न्याय, निर्वापण, अपाद, पण्डित, अचलोपम, बहुमाल, महामाल, शिपिविष्ट, सुलोचन, विस्तार, लवण, कूप, कुसुमांग, फलोदय, ऋषभ, वृषभ, भंग,

मणिबिम्बजटाधर, इन्दु, विसर्ग, सुमुख, शूर, सर्वायुध, सह, निवेदन, सुधाजात, स्वर्गद्वार, महाधनु, गिरावास, विसर्ग, सर्वलक्षणलक्षवित्, गन्धमाली, भगवान्, अनन्त, सर्वलक्षण, सन्तान, बहुल, सकल, सर्वपावन, करस्थाली, कपाली, ऊर्ध्वसंहनन, युवा, यंत्रतंत्रसुविख्यात, लोक, सर्वाश्रय, मृदु, मुण्ड, विरूप, विकृत, दण्डी, कुण्डी, विकुर्वण, वार्यक्ष, ककुभ, वज्री, दीप्ततेज, सहस्रपात्, सहस्रमूर्धा, देवेन्द्र, सर्वदेवमय, गुरु, सहस्रबाहु, सर्वांग, शरण्य, सर्वलोककृत्, पवित्र, त्रिमधु, मंत्र, कनिष्ठ, कृष्णपिंगल, ब्रह्मदण्डविनिर्माता, शतघ्न, शतपाशधृक्, कला, काष्ठा, लव, मात्रा, मुहूर्त, अहः, क्षपा, क्षण, विश्वक्षेत्रप्रद, बीज, लिंग, आद्य, निर्मुख, सदसद्, व्यक्त, अव्यक्त, पिता, माता, पितामह, स्वर्गद्वार, मोक्षद्वार, प्रजाद्वार, त्रिविष्टप, निर्वाण, हृदय, ब्रह्मलोक, परागति, देवासुर-विनिर्माता, देवासुरपरायण, देवासुरगुरु, देव, देवासुरनमस्कृत्, देवासुर-महामात्र, देवासुरगणाश्रय, देवासुरगणाध्यक्ष, देवासुरगणाग्रणी, देवाधिदेव, देवर्षि, देवासुरवरप्रद, देवासुरेश्वर, विष्णु, देवासुरमहेश्वर, सर्वदेवमय, अचिन्त्य, देवतात्मा, स्वयम्भव, उद्गत, त्रिक्रम, वैद्य, वरद, अवरज, अम्बर, इज्य, हस्ती, व्याघ्र, देवसिंह, महर्षभ, विबुधाग्रय, सुर, श्रेष्ठ, स्वर्गदेव, उत्तम, संयुक्त, शोभन, वक्ता,

आशानांप्रभव, अव्यय, गुरु, कान्त, निज, सर्ग, पवित्र, सर्ववाहन, शृंगी, शृंगप्रिय, बभ्रू, राजराज, निरामय, अभिराम, सुशरण, निराम, सर्वसाधन, ललाटाक्ष, विश्वदेह, हरिण, ब्रह्मवर्चस, स्थावराणां पति, नियतेन्द्रियवर्तन, सिद्धार्थ, सर्वभूतार्थ, अचिन्त्य, सत्य, शुचिव्रत, व्रताधिप, परब्रह्म, मुक्तानां परमा गति, विमुक्त, मुक्तकेश, श्रीमान, श्रीवर्धन, जगत्।

महारुद्र कवचम्- भैरवोवाच- वक्ष्यामि देवि कवचं मंगलं प्राणरक्षकम्। अहोरात्रं महादेवरक्षार्थ देवमण्डितम्।।

विनियोग- अस्य श्रीमहादेवकवचस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, सौः बीजं, रुद्रो देवता सर्वार्थसाधने विनियोगः।

अंगन्यास- ॐ रुद्रो ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः।

ॐ रुद्रो ... तर्जनीभ्यां नमः ... शिरसे स्वाहा।

ॐ रुद्रो ... मध्यमाभ्यां नमः ... शिखायै वषट्।

ॐ रुद्रो ... अनामिकाभ्यां नमः ... कवचाय हुम्।

ॐ रुद्रो ... कनिष्ठिकाभ्यां नमः ... नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ रुद्रो ... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ... अस्त्राय फट्।

कवच- रुद्रो मामग्रतः पातु पृष्ठतः पातु शंकरः। कपर्दी दक्षिणे पातु वामपार्श्वे तथा हरः।।

शिवः शिरसि मां पातु ललाटे नीललोहितः। नेत्रं मे त्र्यंबकः पातु बाहुयुग्मं महेश्वरः।।

हृदये च महादेव ईश्वरश्च तथोदरे। नाभौ कुक्षौ कटिस्थाने पादौ पातु महेश्वरः।।

सर्व रक्षतु भूतेशः सर्वगात्राणि मे हरः। पाशं शूलं च दिव्यास्त्रं खंग वज्रं तथैव च।।

नमस्करोमि भूतेश रक्ष मां जगदीश्वर। पापेभ्यो नरकेभ्यश्च त्राहि मां भक्तवत्सल।।

जन्ममृत्युजराव्याधिकामक्रोधादपि प्रभो। लोभमोहान्महादेव रक्ष मां त्रिदशेश्वर।।

त्वं गतिस्त्वं मतिश्चैव त्वं भूमिस्त्वं परायणः। कायेन मनसा वाचा त्वयि भक्तिर्दृढास्तु मे।।

फलश्रुति- इत्येतद्रुद्रकवचं पाठनात्पाप नाशनम्। महादेवप्रसादेन भैरवेन च कीर्तितम्।।

न तस्य पापं देहेषु न भयं तस्य विद्यते। प्राप्नोति सुखमारोग्यं पुत्रमायुः प्रवर्द्धनम्।।

पुत्रार्थी लभते पुत्रान् धनार्थी धनमाप्नुयात्। विद्यार्थी लभते विद्यां च मोक्षार्थी मोक्षमेव च।।

व्याधितो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत् बंधनात्। ब्रह्महत्यादि पापं च पठनादेव नश्यति।।

रुद्र 101 नाम- प्रस्तुत एक सौ एक नाम ब्रह्माजी द्वारा कहे गये हैं। इन पवित्रा नामों का नित्य भक्तिपूर्वक पाठ करने से इहलोक एवं परलोक में सभी सुख प्राप्त होते हैं एवं भगवान् शिव का रक्षा कवच प्राप्त होता है।

ॐ व्योमसंख्याय नमः। ॐ सर्वव्यापी-व्योमहराय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ अनाथाय नमः। ॐ अमृताय नमः। ॐ ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ शाश्वतशम्भवायै नमः। ॐ योगपीठसंस्थितायै नमः। ॐ नित्ययोगीयोगियै नमः। ॐ शिवाय नमः। ॐ सर्वप्रभवायै नमः। ॐ ईशानायै नमः। ॐ तत्पुरुषायै नमः। ॐ अघोरायै नमः। ॐ वामदेवायै नमः। ॐ

सद्योजातायै नमः। ॐ कलतीतायै नमः। ॐ अव्ययायै नमः। ॐ बुद्धायै नमः। ॐ वज्रदेहोपमर्दनायै नमः। ॐ अध्यक्षायै नमः। ॐ विधुयै नमः। ॐ शास्तायै नमः। ॐ पिनाकयै नमः। ॐ त्रिदशाधिप्यै नमः। ॐ अग्नयै नमः। ॐ रुद्रायै नमः। ॐ हुताशायै नमः। ॐ पिंगलायै नमः। ॐ पावनायै नमः। ॐ हरायै नमः। ॐ दहनायै नमः। ॐ वस्तुयै नमः। ॐ भस्मान्तायै नमः। ॐ क्षमन्तकायै नमः। ॐ अपमृत्युहरायै नमः। ॐ धातायै नमः। ॐ विधातायै नमः। ॐ कत्तार्यै नमः। ॐ कालायै नमः। ॐ धर्मपतयै नमः। ॐ शास्तायै नमः। ॐ वियोक्तायै नमः। ॐ अनवमायै नमः। ॐ प्रियायै नमः। ॐ निमित्तायै नमः। ॐ वारुण्यै नमः। ॐ हन्तायै नमः। ॐ क्रूरदृष्टयै नमः। ॐ भयावहायै नमः। ॐ ऊर्ध्वदृष्टयै नमः। ॐ विरूपाक्ष्यै नमः। ॐ दंष्ट्रावान्यै नमः। ॐ धूम्रलोचन्यै नमः। ॐ बालायै नमः। ॐ अतिबलायै नमः। ॐ पाशहस्तायै नमः। ॐ महाबलायै नमः। ॐ श्वेतायै नमः। ॐ विरूपायै नमः। ॐ रुद्रायै नमः। ॐ दीर्घबाहुयै नमः। ॐ जडान्तकायै नमः। ॐ शीघ्रायै नमः। ॐ लघुयै नमः। ॐ वायुवेगायै नमः। ॐ भीमायै नमः। ॐ वडवामुखायै नमः। ॐ पंचशीर्षायै नमः। ॐ कपर्दीयै नमः। ॐ सूक्ष्मायै नमः। ॐ तीक्ष्णायै नमः। ॐ

क्षपान्तकायै नमः। ॐ निधीशायै नमः। ॐ रौद्रवान्यै नमः। ॐ धन्वयै नमः। ॐ सौम्यदेहायै नमः। ॐ प्रमर्दनायै नमः। ॐ अनन्तपालकायै नमः। ॐ धारायै नमः। ॐ पातलेशायै नमः। ॐ सधूमायै नमः। ॐ शाश्वतायै नमः। ॐ शर्वायै नमः। ॐ सर्वपिंगायै नमः। ॐ करालवान्यै नमः। ॐ विष्णवै नमः। ॐ ईशायै नमः। ॐ महात्मायै नमः। ॐ सुखायै नमः। ॐ मृत्युविवर्जितायै नमः। ॐ शम्भवे नमः। ॐ विभुवे नमः। ॐ गणाध्यक्षायै नमः। ॐ त्र्यक्षायै नमः। ॐ दिवस्पत्यै नमः। ॐ समवादायै नमः। ॐ विवादायै नमः। ॐ प्रभविष्णवे नमः। ॐ बिवर्धन्यै नमः। ॐ ज्वलनायै नमः।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana